ॐ जय शिव ओंकारा

Om Jai Shiv Omkara — Shiva Aarti

> ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।
> ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥ ॐ जय शिव ओंकारा॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे॥

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज ते सोहे।
त्रिगुण रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥

अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे॥

कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता।
जगकर्ता जगहर्ता जगपालन कर्ता॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका॥

त्रिगुण स्वामी की आरति जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावे॥